International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 171-173

10+2 स्तर पर पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन (कुरूक्षेत्र जिले के संदर्भ में)

डॉ0 सतनाम सिंह

Ph.D. (Education), Chaudhary Charan Singh University, Meerut, Uttrar Pardesh, India

प्रस्तावना

आज पर्यावरण प्रदूषण विश्वव्यापी ज्वलंत समस्या है। इस समस्या से उभरने के लिए हर आये वर्ग के सभी पुरूष महिला वर्ग में पर्यावरण के प्रति सचेतन होना आवश्यक है। छात्र छात्राओं और किशोर– किशोरियो में उच्च स्तरीय पर्यावरणीय रूझान विकसित करना समय की आवश्यकता है। शहरी किशोर पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक होते है। जबकि ग्रामीण किशोरो पर्यावरणीय जागरूकता अपेक्षाकृत कम होती है। शहरो में पर्यावरण प्रदूषण अधिक होने से नागरीय जनसंख्या इसके दुष्परिणामो को भुगत रही है।

वर्तमान समय में पर्यावरण जागरूकता की हवा भारत में ही नही विश्व स्तर पर चल रही है। बढती जनसंख्या को नियंत्रित करने हेतु राज्य सरकार ने परिवार कल्याण कार्यक्रम चला रखे है। विभिन्न उद्योगो से जनसंख्या को कम से कम हानि पहुंचे इस हेतु राज्य ने राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल का गठन किया हुआ है। जिसके विशेषज्ञ चिमनियो से निकलने वाले धुए आथ्र कारखानो से निकलने वाले पानी की नियमित मनीटरिंग करके उद्योग मालिको को निर्देषित करते रहते है।

अतः केन्द्रीय पर्यावरण विभाग में राष्ट्रीय पर्यावरणीय चेतना अभियान के अन्तर्गत एक बहुत ही ठोस और देशव्यापी कार्यक्रम बनाया और जिसे सर्वप्रथम 1986 में पर्यावरण शिक्षा केन्द्र अहमदाबाद के द्वारा सम्पन्न कराया गया।

आज हमारे देश में पर्यावरण जागरूकता हेंतु पदयात्राये रैलियां जनसभाएं प्रदर्शनियां लोक नृत्य नुक्कड नाटक स्कूल बच्चो के लिये निबन्ध। वाद विवाद कला/पोस्टर प्रतियोगिताये सेमीनार कार्यषालाये प्रशिक्षण कार्यक्रम पर्यावरणीय सामग्री आदि कार्य आयोंजित किए जाते है।

विद्यालयो में पर्यावरण अनुस्थापना कार्यक्रम इसी क्रम में भारत सरकार द्वारा स्कूली बच्चो के लिए चलाए जाने वाला एक प्रोग्राम है। जिसके अन्तर्गत विद्यालयो में एक ऐसा वातावरण तैयार करना है। जिससे बच्चे अपने दायित्वो को समझे और पर्यावरणीय समस्याओ से अवगत हो जाए। इस योजना में कुल ग्यारह कार्यक्रम है।

1. विद्यालयो में नर्सरी कार्य।
2. पाठय पुस्तको का पर्यावरण सामग्री के साथ रिवीजन।
3. अध्यापको का प्रकृति भ्रमण।
4. विद्यार्थियो का प्रकृति भ्रमण।
5. गांवो का पर्यावरण अध्ययन।
6. शहरो का पर्यावरणीय अध्ययन।
7. विभिन्न पर्यावरण विकृतियो का अध्ययन।
8. सेमीनारो का आयोजन।
9. पाठयक्रम निर्माण हेतु कार्यगोष्ठियां।
10. पर्यावरणीय सामग्री का निर्माण।
11. ऐतिहासिक एंव पुरातत्व महत्व के स्मारको को गोद लेना।

पर्यावरण सम्बन्धी इसी आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए शोधर्थी ने इस विषय पर शोध करने की जरूरत महसूस की और यह जानने की कोशिश की है। कि 10+2 स्तर पर छात्र–छात्रोओ में पर्यावरण के बारे में कितनी जानकारी एंव समझ है। व्यावहारिक जीवन में पर्यावरण का क्या स्थान है। इसके संरक्षण के प्रति कितने जागरूक है।

इस शोध के माध्यम से छात्र छात्राओ मे पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने की कोशि की गयी है।

समस्या कथन

शोधकर्ती द्वारा 10+2 सतर पर पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन विद्यार्थियो मे षैक्षिक विकास के साथ उनके अंदर मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करने में अवष्य सहायक सिद्व होगा। विद्यार्थी इससे अपने अध्ययन के साथ साथ पर्यावरण के प्रति भी अपने दायित्वो की ओर अग्रसर होगें।

अतः इसके द्वारा शिक्षण के क्षेत्र में समस्या के हल के लिये सुझाव एवं सार्थक परिणाम प्राप्त हो सकेंगें तथा इस योजना के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाले लाभो को षोधार्थी द्वारा इस समस्या का चयन किया गया।

अध्ययन के उददेष्य : प्रस्तुत षोध कार्य हेतू षोध कर्ती द्वारा निम्नलिखित उददेष्यो को ध्यान में रखा गया है।

1. शायकीय एवं अशासकीय ग्रामीण विद्यालयो के 10+2 स्तर के विद्यार्थियो की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय एवं अशासकीय षहरी विद्यालयो के 10+2 रूतर के विद्यार्थियो की पर्यावरण जाबरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

प्रस्तुत षोध हेतु षोधार्थी द्वारा निम्न परिकल्पनाओ का चयन किया गया है।

तालिका 1: 10+2 स्तर के ग्रीमाण षासकीय एवं अषासकीय विद्यालय के विद्यार्थियो के गणना द्वारा प्राप्त मध्यमान प्रमाणिक विचलन प्रमाणिक त्रुटि एंव कांतिक अनुपात का विवरण

ग्रामीण विधालय	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	S.ED	C.R	विश्वास स्तर	
शासकीय विधालय	50	65.3	10.35	1.655	0.244	0.05	1.98
अशासकीय विधालय	50	65.3	9.17			0.01	2.63

तालिका 2: स्तर के शहरी शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियो के गणना द्वारा प्राप्त मध्यमान प्रमाणिक विचलन प्रमाणिक त्रुटि एंव क्रांतिक अनुपात का विवरण

ग्रामीण विधालय	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	S.ED	C.R	विश्वास स्तर	
शासकीय विधालय	50	65.3	10.35	1.655	0.244	0.05	1.98
अशासकीय विधालय	50	65.3	9.17			0.01	2.63

तालिका 3: ग्रामीण एंव शहरी शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर विद्यालयो मे अध्ययनरत विद्यार्थियो के गणना द्वारा प्राप्त मध्यमान प्रमाणिक विचलन प्रमाणिक त्रुटि एंव क्रांतिक अनुपात का विवरण

ग्रामीण विधालय	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	S.ED	C.R	विश्वास स्तर	
शासकीय विधालय	50	65.3	10.35	1.655	0.244	0.05	1.98
अशासकीय विधालय	50	65.3	9.17			0.01	2.63

का चयन किया गया है ।

1. शासकीय एवं अशासकीय ग्रामीण विद्यालय के 10+2 स्तर के विद्यार्थियो की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नही होता।
2. शासकीय एवं अशासकीय शहरी विद्यालय के 10+2 स्तर के विद्यार्थियो की पर्यावरणीय जागरूकतास में कोई सार्थक अन्तर नही होता।

विधि एवं प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इसके अन्तर्गत अनुर्सधानकर्ती ने क्षेत्र निवेश में आने वाले उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो का सर्वेक्षण किया इसके अन्तर्गत 10+2 स्तर विद्यार्थियो की पर्यावरणीय जागरूकता का सर्वेक्षण किया और शोध्कर्ती ने उचित न्यादर्श प्रक्रिया को अपनाकर प्रश्नावली उपकरण को प्रशासित किया और प्रशासित उपकरण का संग्रहण किया।

न्यादर्ष

न्यादर्ष चयन हेतु शोधकर्ती द्वारा सरल यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया है। इसके अन्तर्गत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयो का चयन सिक्का उछाल के कुरूक्षेत्र जिले के 10 शहरी और 10 ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयो से 50–50 विद्यार्थियो का चयन किया गया है। इसी प्रकार प्रत्येक शासकीय एवं अशासीय शहरी विद्यालयो से 50–50 विद्यार्थियो का चयन किया गया है।

इस प्रकार शोधकार्य हेतु कुल 200 विद्यार्थियो का चयन किया गया है।

उपकरण एवं तकनीक

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ती द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नवली का निर्माण विद्यार्थियो हेतु किया गया है। इस प्रश्नवली मे कुल कथनो की संख्या 50 है। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए तीन विकल्प रखे गए है। तथा प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित किया गया है। प्रश्नवली हल करने की समय सीमा 40 मिनिट रखी गई है।

सांख्यिकीय विधियां

प्रदत्तो का विश्लेशण करने के लिए मध्यमान प्रमाणिक विचलन मानक त्रुटि और क्रोतिक अनुपात सांख्यिकीय विधियो का प्रयोग किया गया है।

प्रमुख उपलब्धियॉ

परिकल्पना क्रमांक : 1 षासकीय एंव अषासकीय ग्रामीण विद्यालयो के 10+2 स्तर के विद्यार्थियो की पर्यावरणीय जागरूकता मे कोई सार्थक अंतर नही होता।

विश्लेशण एंव व्याख्या

उनयुक्त तालिका क्रमांक 1 से स्पश्ट है। कि ग्रामीण आषाकीय विद्यालय के विद्यार्थियो का मध्यमान ग्रामीण षासकीय विद्यालय के विद्यार्थियो के मध्यमान से कम है।

अर्थात शासकीय एंव अशासकीय ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियो की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है। गणन द्वारा प्राप्त सी.आर. का मान 0.204 है। जो0.05 एंव 0.01 विश्वास स्तर के सारणीमान मान क्रमाकः 1.98 एवं 2.63 है। यहॉ क्रातिक अनुपात का मान दोनो सार्थकता स्तर के तालिका मान से कम है। अर्थात शासकीय एंव अशासकीय ग्रामीण विद्यालय के 10+2 स्तर के विद्यार्थियो की पर्यावरण जागरूकता मे सार्थ अंतर नही है।

देखे तालिका 2

विश्लेशण एंव व्याख्या

उपयुक्त तालिका क्रंमाक 2 से स्पष्ट है। कि शहरी अशासकीय विद्यालय का मध्यमान शहरी शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियो के मध्यमान से कम है।

अर्थात शासकीय एंव अशासकीय शहरी विद्यालय के विद्यार्थियो की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है। गणना द्वारा प्राप्त सी. आर. का मान 0.366 है जो 0.05 एंव 0.01 विश्वास स्तर के **सारणीय मान क्रमाकः** 1.98 एंव 2.63 के मान से कम है। अर्थात षासकीय एंव अषासकीय षहरी विद्यालय के 10+2 स्तर के विद्यार्थियो की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नही है।

परिकल्पना क्रमाकः शासकीय एंव अशासकीय शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के 10+2 स्तर के विद्यार्थियो की पर्यावरणीय जागरूकता मे कोई अन्तर नही होता देखे तालिका 3 ।

विश्लेशण एवं व्याख्या

उपयुक्त तालिका क्रंमाक 3 से स्पशट है। कि ग्रामीण एंव षहरी अषासकीय विद्यालय के विद्यार्थियो का मध्यमान ग्रामीण एंव षहरी षासकीय विद्यालय के विद्यार्थियो के मध्यमान से कम है।

अर्थात ग्रामीण एंव शहरी शासकीय एंव अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियो की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है।

गणना द्वारा प्राप्त बण्त का मान 0.403 है जो 0.05 एंव 0.01 विश्वास स्तर के सारणीयन मान क्रंमाक 1.98 एंव 2.63 के मान से कम है।

अर्थात शासकीय एंव अशासकीय ग्रामीण एंव शहरी विद्यालय के

10+2 स्तर के विद्यार्थियो की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नही है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुयेः–

1. शासकीय एंव अशासकीय ग्रामीण विद्यालय के 10+2 स्तर के विद्यार्थियो की पर्यावरण जागरूकता मे सार्थक अन्तर नही है।
2. शासकीय एंव अशासकीय शहरी विद्यालय के 10+2 स्तर के विद्यार्थियो की पर्यावरण जागरूकता मे सार्थक अन्तर नही है।
3. शासकीय एंव अशासकीय शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के 10+2 स्तर के विद्यार्थियो की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है।

सुझाव

1. विद्यार्थियो को पर्यावरण से संबंधित सभी प्रतियोगिताओ में भाग लेना चाहिए।
2. प्रत्येक विद्यार्थियो को ईको क्लब का सदस्य होना चाहिए।
3. विद्यार्थियो को विद्यालय में वृक्षारोपण करना चाहिए।
4. विद्यार्थियो को पर्यावरण संरक्षण संबंधी गतिविधियो में भाग लेना चाहिए।
5. शिक्षको को चाहिए कि वह विद्यार्थियो को पर्यावरण के प्रति जागरूक करें।
6. शिक्षको को पर्यावरण के नवाचार हेतु अवगत कराया जाना चाहिए।
7. विद्यालय में आवश्यक रूप से भ्रमण शिक्षण हेतु सभी विद्यार्थियो को ले जाने की सुविधा होनी चाहिए।

संदर्भ ग्रथं

1. कपिल एच.के. अनुसाधान विधियां हरप्रसाद भार्गव आगरा
2. राय पारसनाथ शिक्षा अनुसंधान आर.लाल. बुक डिपो मेरठ
3. सिंह लाल साहब मापन मूल्यानं एंव साख्यिकीय शिक्षा अनुसांधान साहित्य प्रकाशन आगरा।
4. श्रीवास्तव डी.एन. अनुसाधन विधियां साहित्य प्रकाशन आगरा।